EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 10, Issue 1, January-June, 2021, Impact Factor: 7.687, Available online at: www.eduzonejournal.com

हिंदी साहित्य में नारी की परिभाषा एवं नारी संघर्ष: एक अध्ययन

मोनिया दीक्षित[1], डॉ. कमला कौशिक[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
[2]प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

सार

नारी, सुनने में तो बहुत ही छोटा सा शब्द है पर इसकी गहराई का पता लगा पाना बहुत ही मुश्किल हैं। अगर किसी से नारी की परिभाषा पूछी जाए तो तकरीबन लोगो का कहना होगा कि नारी माँ होती हैं, बेटी होती है और पत्नी होती हैं जो घर का और अपने परिवार और अपने बच्चों की देखभाल करती हैं। अगर यही सवाल किसी औरत से भी पूछा जाए तो शायद उनमे से कई औरतों का जवाब यहीं होगा। क्या वाकई में एक औरत की परिभाषा बस इतनी सी है, क्या एक औरत का स्वरूप बस एक पत्नी, बेटी और पत्नी का ही है? क्या समाज में इनका अस्तित्व बस इतना सा ही हैं?

मूल शब्द : नारी, संघर्ष, हिंदी, साहित्य ।

परिचय

नारी का स्वरूप देखा जाये तो वो सबसे पहले एक बेटी के रूप में अपने माँ-बाप के घर पर जन्म लेती है जिससे सारा घर खुशियों से भर जाता है, ऐसा नही है कि बेटा होने से खुशियां नहीं आती पर बेटी की बात ही कुछ और हैं।ये बात मेरे खुद के अनुभव से बता रही हूं। बेटियां छोटे से हि समझदार होती है उन्हें कुछ सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। आप देखिएगा जैसे ही किसी बेटी के पिता काम से घर आते है तो वो खुद उनके हाथों के बोझ को हल्का कर देती है, बिना पिता के मांगे पानी ले आती है।ये सारी बातें बेटियों को सीखानी नहीं पड़ती वो खुद ही सिख जाती हैं। जैसे जैसे वो बड़ी होती है अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार होती चली जाती हैं।

नारी का दूसरा स्वरुप तब निखरता है जब उसका विवाह होता हैं जब वो अपने पति की जीवन संगनी बनती है। पत्नी बनते ही नारी का स्वरूप कई रिश्तों में बदल जाता है। उसे नए घर और रिश्तों में अपनी जगह बनाने में काफी मेहनत करनी पड़ती हैं।सब को खुश रखना पड़ता हैं। परिवार के सदस्यों के हिसाब से अपनी आदतों,अपनी पसंद में बदलाव करना पड़ता हैं। कभी-कभी तो घर के सदस्यों के नाराजगी का भी सामना करना पड़ता हैं।बह के रूप में वो इन सब परिस्थितियों को अपनी सुझ-बुझ से अच्छी तरह से सम्भालती हैं। इसके बाद आता हैं एक नारी का सबसे महत्वपूर्ण और ईश्वरीय स्वरूप माँ का हैं ।

माँ को इस पूरे संसार में सबसे ऊंचा स्थान दिया गया है। जीवन मे माँ का महत्व इतना है जिसे कोई भी शब्दो मे वर्णन नहीं कर सकता।माँ वो है जो हमें जीवन देती है, जो हमें इस दुनिया में लाती ही,इस संसार की चीजों को हमे देखने का मौका देती देती ही।नारी के इस स्वरूप के आगे कोई भी स्वरूप खड़ा नहीं हो सकता।ष्माँ ष्वो ही है जो अपने बच्चों के लिए दुनिया से लड़ सकती है। माँ बनने के बाद एक नारी में अलग तरह की शक्ति आ जाती है जिसे शब्दो मे लिख पाना बहुत ही मुश्किल काम हैं।अपने जीवन को मौत के रास्ते पर खड़ा कर हजारों दर्द झेल कर वो अपने बच्चे को जन्म देती है और अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के लिए वो हर कठनाइयों का सामना हँसते हुए कर लेती है।

ये तो स्वरूप वो है जो लगभग सभी लोग जानते है। नारी के ये सारे रूप उसके परिवार के प्रति जिम्मेदारीयो,स्नेह के हैं।इन सब से अलग नारी का एक रूप होता है जो होता है समाज के प्रति,अपने देश के प्रति,इस विश्व के प्रति।जिसे आज की नारी बखूबी निभा रही हैं। आज की नारी सिर्फ घर की चार दीवारों तक ही सीमित नहीं है अपितु वो इस दीवारों को लांघ कर समाज के प्रति अपने कार्या को कुशलता पूर्वक पूरा कर रही हैं। आज की नारी हर क्षेत्र में अपना नाम बुलंदियों पर की हुई है, चाहे वो चिकित्सा ,शिक्षा, व्यवसाय, कानूनी कोई भी क्यों न हो। नारी सभी क्षेत्रो में सफलता पूरक अपना काम कर रही है। आज की नारी किसी भी क्षेत्र में पीछे नही है। वो चाहे घर के अंदर चार दीवारों की जिम्मेदारी हो या उस चार दीवारों के बाहर समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी, नारी हर काम को कुशलता से पूरा कर रही है जिसका उल्लेख कर पाना बहुत ही कठिन है।

नारी का यही स्वरूप 'प्रसाद' की पंक्तियाँ दर्शाती हैं -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,विश्वास-रजत-नग-पगतल में,

पीयूष-स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।''

नारी तो अपने नाम की ही तरह कोमल और मंजुल है, इसलिए महाप्राण निराला जी, ने कहा है - ''साहित्य के एक पृष्ठ में एक विकच नारी-मूर्ति, तम के अतल प्रदेश में मृणाल दड़ की तरह अपने शत-शत दलों को संकुलित-संपुटित लेकर बाहर आलोक के देश में अपनी परिपूर्णता के साथ खुल पड़ती है। जड़ों में प्राण संचित हो जाते हैं, अरूप में भुवन मोहिनी ज्योति स्वरूपा नारी।'' सृष्टि के आरम्भकाल से ही नारी पुरुष की कोमल भावनाओं में चेतना फूँकती और उसकी कल्पनाओं में रंग भरती आई है, कदि्चत इसी कारण वह शास्त्रों में भी उसका वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद युगीन शास्त्रों के गृह-संस्था में स्त्री को पुरुष से अधिक सम्मान दिया जाता था। उनकी धारणा यह थी कि विवाह के बाद जब स्त्री घर में प्रवेश करती है, तब उस पर किए गए कटाक्षों से ही घर का वातावरण

विकसित और सुवासित हो जाता है। इसी कारण उसे 'ऋग्वेद' में सम्राज्ञी और यजुर्वेद में 'पुरिन्ध' आदि नामों से पुकारा गया है।

महादेवी, शिवा, जगदम्बा, गौरी, बुद्धि, निद्रा, छाया, शक्ति, तृष्णा, शान्ति, लज्जा, लक्ष्मी, स्मृति, दया, आदि नामों से भी सुशोभित किया गया है। संस्कृत वाङ्मय में बहुत से ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ नारी को त्रिलोक की माता और शान्ति का माध्यम कहा गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में नारी को सखा के रूप में स्थापित कर उसकी महानता पुरुष के सामने स्वीकार की गई है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जीवन के हर स्तर पर स्त्री और पुरुष की समक्षता का आख्यान करना बेहद जरूरी है। महाभारत में स्त्री शब्द का प्रयोग पत्नी के लिए किया गया है। उनके अनुसार वह स्त्री धन्य मानी जाती है, जो अपनी गृहस्थी के सभी कार्यों को तत्परता के साथ करती है, वही पत्नी भाग्यवान समझी जाती है जो संतानवती होने के साथ-साथ अपने पति को सुखी रखते हुए अपने पत्नी धर्म का पालन करती हुई अपने सतीत्व को कायम रखती है।

भारतीय दर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि का अस्तित्व विराजमान है। उसके अनुसार नारी प्रकृति रूपा है। गीता में इसी सत्य का आख्यान अनेकों बार किया गया। कालिदास ने अपने ग्रंथों में 'नारी को गृहिणी, सचिव, सखी और शिष्य के रूप में चित्रित किया है।' स्त्री काव्य का आनन्द और शक्ति का मूल आधार नारी भाव है। बौद्ध साहित्य में स्त्री को 'दो अंगुलभर प्रज्ञावली' कहा गया है। इसमें इन्होंने स्त्री को बधक भार्या, चोर भार्या, माता भार्या, सखी भार्या आदि नामों से अलंकृत किया है। इसलिए कह सकते हैं कि भारतीय शास्त्रों में नारी शब्द सदा से विद्यमान रहा है।

नारी शब्द की व्युत्पत्ति

भारतीय दर्शन में तो स्त्री की लोकोत्तर गरिमा के दर्शन होते हैं। भगवान मनु ने सृष्टि के प्रारंभ में स्त्री (नारी) की उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा अपने शरीर के दो सम भाग करके आधे को पुरुष रूप में और आधे को स्त्री रूप में परिवर्तित करने से बतलाई है. स्त्री को वैदिक आम्नाय के सिद्धांतानुसार प्रथम स्थान दिया गया है।

नारी शब्द

नारी शब्द नृ अथवा नर से बना है। नृ+घीष नारी-नरस्य समान धर्मा नारी, नारी शब्द नर से उत्पन्न माना जाता है। यास्क ने श्नरश् शब्द को नृत से बनाया है-नराः नृत्यन्ति कर्मसु अर्थात् काम की पूर्ति के लिए मनुष्य हाथ पैर नचाता है। नारी के लिए स्त्री शब्द का प्रयोग भी होता है। यह शब्द उसे पुरुष के लैंगिक सहयोगी के रूप में स्त्री की व्युत्पत्ति के विषय में निरुक्तकार का मत है कि स्त्री शब्द स्त्रायै धातु से बना हैद्ध यास्क के मतानुसार स्त्रायै का अर्थ लज्जा से सिकुड़ना है। टीकाकार दुर्गाचार्य नारी की श्स्त्रीश् संज्ञा उसके लज्जाशील होने के कारण मानते हैं किन्तु पाणिनी के धातु पाठ में श्स्त्रायैश् का अर्थ लजाना नहीं मिलता।

धातुपाठ के अनुसार श्स्त्रायैश् शब्द का अर्थ है श्शब्द करना तथा इक्ट्ठा करना। जान पड़ता है कि नारी का स्त्री नाम सम्भवतः उसके वाचाल होने के कारण ही पड़ा। महर्षि पंतजलि ने अपनी अष्टाध्यायी में समझाया है कि नारी को स्त्री इसलिए कहते हैं कि गर्भ की स्थिति उसके भीतर रहती है।

उन्होंने एक दूसरी व्युत्पत्ति भी की है- शब्द स्पर्श-रूप सगंधाना गुणानां स्त्रायानं-संधातम-स्त्री अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध-इन सब का समुच्चय ही स्त्री है। इससे स्पष्ट है कि नारी शब्द की व्युत्पत्ति अनेक शब्दों से मानी गयी है।

नारी विद्वानों के मत :

प्रेमचन्द जी के मतानुसार रू पुरुष विकास के क्रम में नारी के पीछे पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तक पहुंचेगा। वह स्त्री हो जाएगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार रू स्त्री पूजन से ही समाज की प्रगति होती है। जिस देश अथवा समाज में स्त्री पूजन नहीं होता वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता। पश्चिमी देशों के अधःपतन का कारण उन्होंने शक्तिरूपिणी स्त्री की अवहेलना माना है। रविन्द्र नाथ ठाकुर के मतानुसार रू उन्होंने अपनी रचना श्मानसी गीतश् में नारी को भगवान की अद्भुत कृति माना है। महादेवी वर्मा के अनुसार रू पुरुष प्रतिशोधमय शोध है, स्त्री क्षमा। पुरुष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति। पुरुष ब्रह्मा है तो स्त्री हृदय की प्रेरणा है।

नारी का संघर्ष

जहाँ आज की नारी स्पष्टवादी और स्वच्छंद विचारो से ओत-प्रोत है तो वहीं दूसरी ओर उत्तर-आधुनिकता में संभ्रात उच्च वर्ग की महिलाएं सांस्कृतिक मूल्यों से हटती और स्वकेन्द्रित बनती नजर आती हैं। इस दृष्टि से इसे युग का संक्रमणकाल कह सकते हैं। इस संक्रमणकाल में जहाँ एक ओर नारी की स्थिति में द्वन्द्व है तो दूसरी तरफ संघर्ष परिवार से लेकर अपने कार्यक्षेत्र तक वह क्या-क्या नहीं झेलती है, यह उसकी आँखों का सूनापन बयां कर जाता है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय में नारी प्रत्येक स्तर पर संघर्ष करती दिखाई देती है। आज की नारी सामाजिक महत्त्व रखने वाले महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय बेबाकी से रखती है। इन नारियों ने नशा-मुक्ति, पर्यावरण पर संरक्षण, साक्षरता संवर्धन और लिंग समानता, दहेज विरोधी तथा महिलाओं के प्रति अत्याचार की रोकथाम और 33 प्रतिशत आरक्षण जैसे मुद्दों के संबंध में कई सशक्त आंदोलनों का नेतृत्व भी किया। आज प्रौढ साक्षरता कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी 62 प्रतिशत है। आज की नारी ने यह भली-भाँति जान लिया है कि उन्हें समाज में अपना वजूद स्थापित करने की यह लड़ाई स्वयं ही लड़नी होगी।

स्त्री-सशक्तिकरण के आन्दोलन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा है, यह प्रगतिशीलता आधुनिकतावाद, उत्तर-आधुनिकतावाद और आर्थिक उपनिवेशवाद की कोख से जन्मी स्त्री जो आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनकर पुरुष की अनुगामी न बनकर, उसकी की साथी, उसकी सहचर बनकर रहना चाहती है।

आदर्श आज जो भी हम अपने सामने रखे, सही संदर्भ में हो। सीता, सावित्री हमारी संस्कृति है, इतिहास है और हमारे आदर्श भी। इन आदर्शों तक पहुँचना आज की जरूरत है। मानवीय अधिकारों को अपने जीवन में उतारना जरूरी है। शायद महिलाओं को वैसे ही पुनः प्रतिक्रिया की प्रक्रिया में से गुजरना पड़े जैसे सतोगुण तक पहुँचने के लिये रजोगुण में से गुजरना ही पड़ता है। आज की नारी में कर्मशीलता की इच्छा लगातार बढ़ती जा रही है। वह 'शक्ति' है व आत्मा है। आत्मा का उद्धार आत्मा ही कर सकती है।

नर व नारी समाज रूपी सिक्के के दो महत्त्वपूर्ण भाग हैं। इन दोनों के पारस्परिक सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों पर ही समाज का संतुलित निर्माण टिका हुआ है। इन दोनों के सहयोग एवं समर्पण में ही जीवन की उन्नति समाहित है। भारतीय इतिहास में गांधी और साहित्य में प्रेमचन्द युग ने नारी की स्थिति को बेहतर बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। राहुल सांस्कृत्यायन ने नारी की सोचनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखा हैं कि पिता रक्षित कौमार्य, भर्ता रक्षित बार्धम्य 'न स्त्री स्वतन्त्रय् मर्हति' से मानों स्त्री-दासता का पट्टा मिल गया।

हिन्दुओं ने स्त्री को पति की अर्धांगिनी माना और पति की मृत्यु के बाद मानो उसके संग स्त्री भी मर जाती है। इसी को साबित करने के लिए पिछली शताब्दी तक हजारों विधवाएं पति की लाश के साथ जिन्दा जला दी जाती थी। किन्तु उस अर्धांग के नियम को पति के लिए कभी स्वीकार नहीं किया गया।''

नारी की स्थिति में यह बदलाव कोई जादू की छड़ी घुमाने से नहीं हुआ है। इस परिवर्तन की बयार परम्परागत सोच और जीवन मूल्यों की आपसी टकराहट के ही बाद विकसित हुई है।

इस परिवर्तन की बयार को नारी के जीवन में लाने व उसे जागृत करने के साथ उचित सम्मान दिलाने वाले राजाराम मोहन राय, ईश्वरचंद विद्या सागर, महर्षि कर्वे अरविन्द आदि समाज सुधारों के जिम्मेदार रहे। इन्होंने अपने प्रयासों से नारी को कानूनी अधिकार दिलाकर समाज में नारी अस्तित्व को स्वीकृति प्रदान करवाने में उसकी मदद की। 19वीं शताब्दी में राजाराम मोहन राय ने बह्म समाज (1828) की स्थापना कर युगों से प्रताड़ित, दुःखों से त्रस्त तथा समाज द्वारा शोषित नारी के उत्थान के लिए शिक्षा को अनिवार्य माना गया। उसी तरह उन्होंने 1829 में अपने सतत् परिवर्तनों से 'सती प्रथा निषेध कानून' पास करवाया, जिससे नारी की स्थिति में मामूली सा सुधार हुआ। 19वीं शताब्दी में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और इस मंच के माध्यम से इन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, वृद्ध विवाह का विरोध करते हुए विधवा-विवाह का समर्थन किया। स्त्रियों की बेहतरी के

लिए 1852 ई॰ में विधवा विवाह अधिनियम ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के नेतृत्व में पारित हुआ। जिसके प्रभावस्वरूप वे कुरीतियों की शृंखला को तोड़कर अपने इन अधिकारों के कारण परिवार व समाज में पुरुष के समान होने का आत्मविश्वास उसमें आया।

पूना में 'सेवासदन' नामक सुधार संस्था की स्थापना गोविंद रानाडे ने इस उद्देश्य के साथ की थी कि इसके माध्यम से स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दे सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस दिशा में एक कदम की ओर आगे बढ़ते हुए अनेक गुरुकुलों तथा कन्या छात्रावास की स्थापना की। स्वामी विवेकानंद ने भी पूना में महिला महाविद्यालय, मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली, बनारस आदि नगरों में विधवाओं की शिक्षा के लिए उनमें केन्द्र खोले। इस प्रकार आर्य समाज, ब्रह्म समाज आदि संस्थाओं ने नारी के अन्दर प्रेरणा शक्ति जगाने के लिए स्त्री-शिक्षा का प्रचार-प्रसार, बाल विवाह के निषेध तथा सती-प्रथा के उन्मूलन की दिशा में विशेष प्रयास किये गये। सब प्रयत्नों के क्रियान्वित होने से समाज का नारी के प्रति नजरिया तथा नारी का स्वयं के प्रति दृष्टिकोण मे काफी परिवर्तन देखने को मिला। बीसवीं सदी में हुए इस नवोत्थान को भारतीय नारी का पुर्नजन्म काल भी कहा जा सकता है। धर्म की रूढ़ियों और पुरुष के द्वारा दी गई दासता की बेड़ियों को ठुकराकर यह नारी अपनी प्रगति और विकास की दिशा में प्रवृत्त हुई। पुरुष समाज सुधारकों के साथ-साथ महिला समाज सुधारकों ने भी इस दिशा में अपना योगदान दिया। पाश्चात्य देशों में नारी की स्थिति से प्रभावित भारतीय नारियो ने मध्यकाल की कठोर नैतिकता को उतार फेंका तथा विभिन्न संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से अपने अस्तित्व की रक्षा में जुट गई।

कुछ समय पूर्व तक स्त्री पुरुष की बराबरी का मसला महज एक कल्पना थी। किन्तु आज धीरे-धीरे यह पूर्ण रूप ग्रहण करता नजर आ रहा है। नारी के लिए जब से शिक्षा के द्वार खुले, उसके बाद उसे अपने अधिकारों का ज्ञान होने लगा। उसके सुप्त मन में चेतना का ऐसा ज्वार उठा कि वह अपने अस्तित्व, गरिमा के सम्मान के लिए समाज के सामने डटकर खड़ी हो गई। आज सभी स्तरों - सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा, लगन व कड़े परिश्रम से उसने साबित कर दिया है कि उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर रखने की समाज की चाल को वह अब सफल नहीं होने देगी। जब-जब उसे योग्यता दिखाने का अवसर मिला, तब-तब उसने अपनी पूरी शक्ति, सामर्थ्य और उर्जा लगाकर समाज में अपनी प्रतिभा को साबित करके दिखा दिया।

शिक्षा के व्यापक प्रसार ने चेतना युक्त नारी के अंदर वैचारिक जागृति पैदा की। सही अर्थों में नारी जागरूक तभी कहलाई जब उसके अन्दर वैचारिक क्रान्ति आई, जिसके फलस्वरूप उसने आत्मविश्वास से युक्त प्रशासनिक, राजनैतिक, श्रम के क्षेत्रो में कदम बढ़ाना आरम्भ किया। जिसका परिणाम यह निकला कि आज की आधुनिक नारी घर की रसोई में खाना बनाने की बात हो या फिर अंतरिक्ष में जाकर अपने साहस का परचम लहराना हो या फिर देश की सीमाओं पर एक चौंकने प्रहरी की भूमिका हो उसने हर काम

सुगमतापूर्वक करके दिखा दिया है कि आज की नारी विश्व के प्रत्येक स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ती हुई नित्य प्रति नए क्षितिजों पर अपना नाम अंकित करके कामयाबी की नई ऊँचाइयों को चूम रही है। इसका ज्वलंत उदाहरण 26 जनवरी 2015 को गणतन्त्र दिवस पर हमारे मुख्य अतिथि अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को गॉर्ड ऑफ ऑनर देने का सम्मान महिला विंग कमांडर पूजा ठाकुर को मिला। 'महिला सशक्तिकरण' की ऐसी अनूठी ताकत को पूरे विश्व ने देखा और प्रत्येक महिला ने स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। सलाम है ऐसी नारी शक्ति को ।

निष्कर्ष

शिक्षा, विज्ञान के व्यापक प्रसार वाले इस युग में पूजा ठाकुर, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, रिर्चा कोचर, अंरुधति राय, लक्ष्मी, मेघा पाटकेर जैसी नारी शक्ति स्वयं अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ़ व अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो गई हैं। अब वह राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि से स्वतन्त्र तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होती जा रही है। आज उनका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है उसकी सीमाएँ अन्तहीन है। अब उसने रीति-रिवाजों, खोखली परम्पराओं के नाम पर दी जाने वाली अपनी बलि का बहिष्कार कर दिया है। वह आजीवन अविवाहित रहना बेहतर समझती है, बजाए अनचाहे व्यक्ति की जीवन संगिनी बनने के। यह निर्विवाद सत्य है कि वैदिक काल की सम्मानित नारी मध्ययुग में आकर तिरस्कृत हुई, जिसका फल यह हुआ कि नारी ने नारकीय यातनाओं से खुद को बाहर निकाल कर खोखली परम्पराओं के कांपते खण्डहरों को खुद गिराना आरम्भ कर दिया। वे ऐसी मान्यताओं को नकार रही है जो उनकी भूमिकाओं को नज़रअंदाज करती हैं।

सन्दर्भ सूची

[1]. श्रुतिकान्त पाण्डेय , "हिन्दी भाषा और इसकी शिक्षण विधियाँ हिन्दी भाषा और शिक्षण विधियों की परिचायक", पृष्ठ 156-158
[2]. उमा शुक्ल, भारतीय नारी अस्मिता की पहचानष्, पृष्ठ 26
[3]. सीता राजवरा, "हिंदी कथा-साहित्य में नारी के बदलते सन्दर्भ", पृष्ठ 34-36
[4]. रेवा कुलकर्णी, "हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी", पृष्ठ 278
[5]. आर.सी. मजूमदार और ए .डी. पुसल्कर (संपादक): भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति . वॉल्यूम ।, वैदिक युग. मुंबई: भारतीय विद्या भवन 1951, पी.394
[6]. समकालीन हिन्दी समीक्षा (गूगल पुस्तक ; लेखक -डॉ हुकुमचंद राजपाल)
[7]. हिन्दी आलोचना (गूगल पुस्तक; लेखक - विश्वनाथ त्रिपाठी)
[8]. "संग्रहीत प्रति". मूल से 15 जून 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 नवंबर 2010.
[9]. क्लेरिस्स बदर द्वारा वूमन इन ऐन्शन्ट इण्डिया . ट्रबनर्स ओरिएंटल सीरीज. रौत्लेदगे, 2001. आईएसबीएन 978-0-415-24489-3.